जमींदारी और कारखानेदारी

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी अंक १९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ११ जुलाअी, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सच्चे कार्यकर्ता चाहिये

[डालटन गंजमें दिया हुआ विनोबाजीका अेक प्रवचन]

छः महीने पहले मैं अिस जिलेमें अेक बार प्रवास कर चुका हूं। अिन छः महीनोंमें देशके वातावरणमें बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। अिस जिलेमें जब मैं पहली बार आया था, तब बड़ी मुश्किलसे १०-१२ हजार अेकड़की बात कहता था। लेकिन अब आप देख सकते हैं कि लाखोंकी बात चल रही है। बिहार कांग्रेसका पहला प्रस्ताव चार लाखका था, लेकिन अब वह ३२ लाखका हो गया है। अिस प्रकार जिस तरह देशकी आशा अुत्तरोत्तर बढ़ती गअी है, अुसी प्रकार वाणी भी अूंची अुठती गअी है। कार्यकर्ताओंकी संख्यामें भी वृद्धि हुअी है। हरअेक पक्षने अिस कामके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की है और हरअेकके दिलमें अिसके बारेमें अच्छी भावना है। कुछ शंकाअें अब भी अुठती रहती हैं, लेकिन यह अेक तरहसे जरूरी और ठीक भी है। कारण शंकायें अुठती हैं, तो विचारोंकी शुद्धि भी हो जाती है। लेकिन अिस बारेमें अब किसीको कोअी सन्देह नहीं है कि भूदान-यज्ञ-आन्दोलन अेक कल्याणकारी आन्दोलन है। कुछ लोगोंको अुसकी गति धीमी मालूम होती है। अिसके द्वारा पूर्ण क्रान्ति हो सकती है या नहीं, अिस बारेमें भी दो मत हो सकते हैं। लेकिन अितनी बात तो सब लोगोंने स्वीकार की है कि यह आन्दोलन जितना भी बढ़ेगा अुतना लोगोंका कल्याण ही करेगा।

विचारकी गति

किसी भी क्रान्तिके कार्यका अुदय पहले चित्तमें होता है। बादमें वह वाणी द्वारा प्रकट होता है, संकल्पका रूप लेता है और अन्तमें कृतिका रूप लेता है। कृति भी पहले-पहल व्यक्तिगत ही होती है, फिर सामूहिक बनती है और बादमें अुस पर सारे समाजकी स्वीकृतिकी मुहर लगती है। अिस प्रकार पहले किसी व्यक्तिके चित्तमें धर्मविचारका अुदय होता है और बादमें वह सारे समाजमें अेक स्मृति या कानूनका रूप ले लेता है। अिसके बाद वह रूढ़ आचार या जीवन-निष्ठाके रूपमें माना जाने लगता है। अेक अुदाहरण देता हूं। आज चोरी करना बुरा समझा जाता है। सर्वसाधारण समाज और कानून भी चोरीके खिलाफ है। लेकिन अैसा नहीं है कि चोरीके विरुद्ध कानून होनेसे लोग चोरी नहीं करते। मनुष्यकी विवेकबुद्धिने यह मान लिया है कि चोरी करना मानवताके खिलाफ है। अिसलिअे धर्मस्मृति और कानून दोनोंमें अुसे स्थान मिला है। शुरूमें अैसी भावना नहीं थी। लेकिन जैसे-जैसे नीति-विचार स्थिर होता गया, वैसे-वैसे निष्ठा बढ़ती गअी। समाजकी निष्ठाके बारेमें मैंने यह अेक अुदाहरण दिया। अिसी प्रकार अब हमें यह धर्मविचार रूढ़ करना है कि अपने पास जरूरतसे ज्यादा जमीन नहीं रखनी चाहिये, न अधिक संग्रह ही करना चाहिये; अधिक संग्रह करना पाप है; जैसे चोरी करना पाप है, वैसे ही संग्रह करना भी पाप है। यह विचार कोअी नया नहीं, पुराना ही है। ऋषियोंने अपने जीवनमें अुस पर अमल भी किया है। व्यक्तिगत रूपमें अुस पर अमल करनेवाले महात्मा और साधु-संत हमारे यहां हुअे हैं। लेकिन सर्वसाधारण जनतामें चोरीके खिलाफ जैसी भावना है, वैसी तीव्र और दृढ़ भावना संग्रहके खिलाफ नहीं है। अुसे अब हमें पैदा करना है। अिसलिअे मैंने अिस आन्दोलनको धर्मचक्र-प्रवर्तन नाम दिया है। कारण अुसके पीछे अेक विचारको सामाजिक स्वरूप देनेका हेतु है। असंग्रह और अपरिग्रहका गुण ऋषि और साधु-संन्यासियोंको ही शोभा देनेवाला माना गया था। लेकिन वह सामान्य लोगों, गृहस्थोंके जीवनका भी अुतना ही बड़ा आधार है। अुसके बिना शोषण खतम नहीं होगा। अिस धर्मविचारकी हमें सामाजिक निष्ठाके रूपमें स्थापना करनी है। अिसका आरंभ विचार-क्रान्तिसे और अन्त सामाजिक क्रान्तिसे होगा।

सामाजिक क्रान्तिका आरंभ

अिसका आरम्भ जमीनका सवाल हल करनेसे हुआ है। अुसीके लिअे मैं सारे हिन्दुस्तानमें घूम रहा हूं। और भी अनेक लोग घूम रहे हैं। लेकिन मैंने यह निश्चय किया कि किसी अेक प्रान्तमें अुसका व्यापक रूपमें प्रयोग करके यह दिखाना चाहिये कि अुससे सवाल किस तरह हल होता है। अिसीलिअे मैंने बिहारसे ३२ लाख अेकड़की मांग की है। यह आंकड़ा दिखनेमें बड़ा लगता है। लेकिन जब हम सारी जमीनका सवाल हल करनेकी दृष्टिसे सोचते हैं, तब यह बहुत बड़ा नहीं मालूम होता। यदि हमने कमसे कम ३२ लाख अेकड़ जमीन अहिंसा, प्रेम और शांतिसे प्राप्त कर ली, सद्भावनाका प्रचार करके — अधिक संग्रह करना पाप है, यह निष्ठा समाजके गले अुतारकर अितना काम पूरा कर लिया, तो जमीनका सवाल हल हो या न हो अितना तो हम जरूर कह सकते हैं कि सवाल हल करनेका रास्ता हमने साफ कर दिया। अतः अिस कामको आगे बढ़ानेके लिअे विचार-प्रचार करना होगा। और विचार-प्रचारका काम वही लोग कर सकेंगे, जिन्होंने अुस पर अमल किया है। अिस प्रकार अिस विचार पर अमल करनेवाले कार्यकर्ता जितनी अधिक संख्यामें मिलेंगे, अुतना ही यह काम जल्दी होगा। अिसका मूल विचार वातावरणमें फैल गया है। हम देखते हैं कि पलामू जैसे पिछड़े हुअे जिलेमें भी लोग जमीन देनेके लिअे कितने अुत्सुक हैं। विचारके पटते ही वे जमीन देनेमें देर नहीं करते। अिसका मतलब यही है कि अव्यक्त रूपमें यह बात वातावरणमें फैल गअी है। अुसे व्यक्त रूप देनेके लिअे गांव-गांवके हर किसानसे दानपत्र प्राप्त करना होगा। तभी अुसे अेक व्यापक क्रियात्मक रूप प्राप्त हो सकेगा।

कार्यकर्ताओंकी जरूरत

अिस कामके लिअे अुत्तम चरित्रवाले और निष्ठावान कार्यकर्ताओंकी जरूरत है। सिर्फ पलामू जिलेमें ही करीब-करीब डेढ़ लाख अेकड़ जमीन मिली है। अुससे दुगुनी भी मिल सकती है। लेकिन अिससे काम नहीं चलेगा। प्रत्येक गांवके प्रत्येक किसानसे

www.vinoba.in

जब प्रेम-चिह्नके रूपमें कुछ न कुछ दान मिलेगा, तभी यह काम पूरा हुआ कहा जायगा। यह सब करनेके लिअे कार्यकर्ताओंकी सेना चाहिये।

केवल कर्म नहीं, कर्मयोग

साहित्य-प्रचारके लिअे हम अपने साथ पुस्तकें लेकर घूमते हैं। अुसमें भी मैं 'गीता-प्रवचन' की खास सिफारिश करता हूं। यह क्यों? अिसलिअे कि जब मैं भूदान-यज्ञके बारेमें विचार करता हूं, तब गीताकी दी हुअी सीख मुझे याद हो आती है। धर्मविचार किसी धर्मनिष्ठ पुरुषके द्वारा ही फैल सकता है। गीताने जो बात सिखाअी है, अुसको सीखे बिना निष्ठावान कार्यकर्ता नहीं मिलेंगे। कारण अुसके लिअे कर्मयोगके शिक्षणकी जरूरत है। कर्म तो सभी करते हैं। बिना कर्मका कौन है? आलसी भिखारी भी आखिर भीख मांगनेका काम तो करता ही है। लेकिन कुछ न कुछ कर्म करनेमें कोअी विशेषता नहीं है। कर्मयोग तो तभी सिद्ध होता है, जब मनुष्य अहंकार छोड़कर काम करता है। राग, द्वेष, क्रोध आदि जब मनुष्यमें नहीं रहते, फलकी वासना जब मनुष्यको क्षुब्ध नहीं करती और जब मनुष्य किसी कामको धर्मकार्य समझकर निरपेक्ष बुद्धिसे करता रहता है, जब अुसे कर्मयोग सिद्ध होता है। अैसे कर्मयोगी प्रचारकोंकी जरूरत है। फिर वे मुट्ठीभर ही क्यों न हों। मैंने हजारों कार्यकर्ताओंकी मांग की है। लेकिन अुसमें यह बात मान ली गअी है कि लाखों देहातोंमें पहुंचना है अिसलिअे हजारों कार्यकर्ता चाहियें। मगर ये सब सच्चे कार्यकर्ता होने चाहियें। अिसीलिअे मुझे गीताकी याद आती है।

कार्यकर्ताओंके गुण

मेरी अिच्छा है कि कुछ कार्यकर्ता अैसे होने चाहियें, जो यह निश्चय करें कि अिस कामके पूरा होने तक वे और कोअी काम नहीं करेंगे। पांच-पचीस कार्यकर्ता भी अैसे मिल गये, तो जो रचना हम करना चाहते हैं अुसे प्रत्यक्ष दिखा सकेंगे। वे कार्यकर्ता अैसे होने चाहियें, जो किसी भी पक्षको नहीं मानते, जो मनुष्यमात्रको अपना स्वामी और खुदको अुसका सेवक मानते हैं। जितने भी मनुष्य दीखते हैं, वे सब हमारी सेवाके पात्र हैं, हमारे स्वामी हैं और हम अुनके सेवक हैं, अैसी स्वामी-सेवककी भावनासे काम करनेवाले कार्यकर्ता चाहियें।

यहां काफी तरुण लोग आये हैं और शांतिपूर्वक मेरा भाषण सुन रहे हैं। मेरी आवाज अुनके कानों तक पहुंच रही होगी; वह अुनके हृदय तक पहुंचे। हिन्दुस्तान अब आजाद हो गया है। यह बात अुन्हें ध्यानमें रखनी चाहिये कि प्राचीन संस्कृतिके आधार पर अपने देशकी प्रतिष्ठा बढ़ानेके लिअे यदि हमने अपना जीवन भी दे दिया, तो वह हमारे लिअे ही लाभदायी होगा। अिस देशमें अुत्तम संस्कारोंका संवर्धन हजारों वर्षोंसे होता चला आया है और अब स्वराज्य मिलनेके बाद तो हम सारी दुनियाकी सेवा कर सकेंगे। अैसा योग पहले कभी नहीं आया था। अिसलिअे मेरी मांग अैसे लोकसेवकोंके लिअे है, जो जनताके शिक्षण और संस्कारोंको ध्यानमें रखकर मानवमात्रमें कोअी भेद न करनेवाले हों और किसी भी पक्षभेदका आग्रह न रखते हुअे अहंकार छोड़कर काम करनेवाले हों। हमारी वाणीमें मृदुता होनी चाहिये, बुद्धि और हृदयमें नम्रता होनी चाहिये तथा विचारोंमें शुद्धता होनी चाहिये। हम अपने विचार लोगोंको समझा दें और जो लोग दान दें अुनसे वह ले लें। जो नहीं दें अुन्हें यह समझकर नमस्कार करें कि अिनके यहां फिर हमें आना होगा, यह अिनका प्रथम परिचय हुआ और अिस पहली मुलाकातमें मानो अिन्होंने हमें दूसरी बार फिर आनेका निमंत्रण दे दिया है। जो जमीन नहीं देता अुसने फिर आनेका निमंत्रण दिया है, अैसा समझकर अुस नारायण-मूर्तिको नमस्कार करके हमें वहांसे चले आना चाहिये और बादमें अनुकूल मौका देखकर फिर अुसके पास जाना चाहिये। अिस प्रकार हम निष्ठासे, नम्रतासे और निरहंकार होकर काम करेंगे, तो हमारा शब्द अवश्य ही अमोघ होगा, कभी निष्फल नहीं जायगा।

आत्मा की व्यापकताकी अनुभूति

हम अपने स्वामी — जनता — को दीक्षा दें, अुसे यह बात जंचा दें कि आत्मा केवल अेक छोटेसे शरीर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यहां जितने शरीर तुम्हारे सामने दिख रहे हैं, अुन सबमें तुम व्याप्त हो। अिसलिअे केवल अपना और अपने माने जानेवाले परिवारका ही विचार न करते हुअे सारे समाजका विचार करो। समाजको यदि जिन्दा रहना है, तो हमारे संकुचित रहनेसे काम नहीं चलेगा, अैसा आत्माकी व्यापकताका भान यदि हम अुसे करा दें, तो वह अुसे जरूर समझ लेगी। क्योंकि यह अेक वस्तुस्थिति है। व्यापकताकी अनुभूति ही सत्य है। अिसीलिअे तो लोग गृहस्थाश्रमी बनते हैं, बालबच्चोंको जन्म देते हैं और अुसके द्वारा वे समाज तक पहुंचते हैं। यदि अुसके द्वारा वे समाज तक नहीं पहुंचते, तो पुनः आत्माको मर्यादित बनाते हैं। अुससे मनुष्यको कभी समाधान मिलनेवाला नहीं है। अिसलिअे आत्माको कैदी न बनाओ, यह बात यदि लोगोंको समझा दी जाय, तो मुझे विश्वास है कि लोग अवश्य दान देंगे। हमें अिस विश्वाससे काम करनेवाले कार्यकर्ता चाहियें।

('भूदान-यज्ञ बिहार' से)

टिप्पणियां

प्रकट रूपमें अच्छा काम

श्री राजगोपालाचार्यने 'अेन० पी० अेस०, अिंडिया' के लिअे लिखे लेखमें अुन लोगोंको जवाब दिया है, जो मौके-बेमौके यह घोषणा करते रहते हैं कि शराबबंदी खासकर नाजायज शराब बननेके कारण असफल रही है। वे कहते हैं:

> "शराबबंदीके विषयमें कोअी अेकदम सफलताकी आशा नहीं कर सकता, जब कि हमारे यहां पिछले १०० बरससे भी ज्यादा समयसे सरकारी शराबकी दुकानोंकी नाशकारी प्रथा चालू रही है। लेकिन जो लोग यह दावा करते हैं कि नाजायज शराब गाली जानेके कारण अिस सारे साहसभरे प्रयोगको असफल मानना चाहिये, वे अतिशयोक्ति करते हैं। क्या हमारे यहां गुनाह बिलकुल बन्द हो गये हैं? नहीं; फिर भी ताजीरात हिन्द तो रहना ही चाहिये।
>
> "शराबके आदी बने हुअे लोग कैसा भी अनुभव करें और शराबके भूतपूर्व व्यापारी कुछ भी कहा करें, लेकिन राज्यकी शराबबंदीकी नीतिसे गरीबोंको निश्चित रूपसे लाभ हुआ है।"

हमें यह महसूस करना चाहिये कि शराबबंदी प्रकट रूपमें अच्छा काम है। वह आजाद भारत और अुसकी जनता द्वारा अुठाया गया नैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रान्तिका काम है।

२३-६-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

पेड़ लगाअिये

हर सालके मुताबिक अिस साल भी बारिशके मौसममें पेड़ लगानेका सत्र शुरू हुआ है। यह अच्छी बात है। यह पर्व जितने बने अुतने पेड़ लगाकर घर-घर मनानेकी प्रथा हो जानी चाहिये। अिस संबंधमें अेक भाअीने जो सुझाव दिया है, वह सोचने जैसा है:

> "आजकल देशमें जगह-जगह नये रास्ते बनाये जा रहे हैं। अिन नये और पुराने रास्तोंके दोनों बाजू बेकार विदेशी पेड़ोंके बजाय आम, जामुन आदि फलोंके पेड़ लगाये जायें, तो राष्ट्रको अुनसे आय भी हो सकती है। आयके प्रश्नको

www.vinoba.in

कदाचित् बहुत महत्त्व न दिया जाय, तब भी अिस बारेमें तो कोअी सन्देह नहीं कि अिससे राष्ट्रके खुराक-संबंधी अुत्पादनमें काफी वृद्धि हो सकती है।"

(गुजरातीसे) म० प्र०

अेक बड़ा जुआ

[त्यागरायनगर, मद्रासके ठक्कर बापा विद्यालयमें हुअे श्री राजाजीके भाषणकी ता० २०-६-'५३ के 'हिन्दू' में छपी रिपोर्टसे।]

परीक्षायें पास करना और अनेक प्रकारकी प्रतियोगिताओंमें सफल होना अेक बड़ा जुआ ही है। जो लोग अिनमें नापास होते हैं, वे स्वभावतः गुस्सा होते हैं। वे अेक बार कोअी नौकरी मिल जाने पर अुससे सन्तुष्ट भी नहीं होते। नौकरी मिलनेके बाद वे अूपर और अूपर चढ़ना चाहते हैं, और अगर वे अैसा करनेमें असमर्थ रहते हैं तो परेशान होते हैं। लेकिन आम लोगोंमें अिस तरहकी होड़ नहीं होती। वे अपना-अपना काम करते रहते हैं। लेकिन कोअी पूछ सकता है: "क्या यह प्रगतिका लक्षण है?" मैं अितना ही कहूंगा कि दूसरे देशोंने अिसलिअे प्रगति की है कि वे सरकारी नौकरियोंको बहुत ज्यादा महत्त्व नहीं देते। वहां हर-अेक अपने क्षेत्रमें काम करता रहता है।

(अंग्रेजीसे)

धर्म और शराब

बम्बअीके अेक अखबारके अेक स्तंभ-लेखकने यह घोषणा करनेका साहस किया है कि 'हिन्दू धर्ममें शराबको बहुत प्रिय माना गया है।' लेकिन सच तो यह है कि ऋग्वेद (७, ८६-६) में जुअेके साथ शराबकी भी निन्दा की गअी है और अुसे पापका अेक कारण माना गया है। मैत्रायणी संहिता (३, ६-३) में शराबको जुअे और कामवासनाके साथ तीसरी मुख्य बुराअी माना गया है। छांन्दोग्य अुपनिषद् (४, १०-९) मदिरा-पानको ब्रह्महत्याके बराबर घोर पाप मानता है। मनु (११, ५४) भी अिसे महापातकोंकी श्रेणीमें रखते हैं। और बृहस्पतिने तो यहां तक कह डाला है कि जो आदमी शराब पीता है अुसकी शुद्धि तभी होती है, जब वह अुबलती हुअी शराब अपने गलेके नीचे डाले। कृष्णके जातिभाअी यादव लोग मदिरा-पानसे अुन्मत्त बनकर आपसमें लड़े और सबके सब कट मरे।

स्तंभ-लेखकने अीसाअी धर्मके बारेमें भी यही भूल की है। सॉलोमन कहता है कि शराब सांपकी तरह काटती है और जहरीले नागकी तरह डंसती है (प्रोव्हर्ब्स: २३, ३२)। कार्डिनल मर्सियर भी अिसी तरह सबूत देते हैं कि शराब लड़ाअीसे ज्यादा लोगोंको मारती है और बेअिज्जतीसे मारती है।

(अंग्रेजीसे) वा० गो० दे०

"मानवताको सूली पर चढ़ाया जा रहा है"

[प्रेसिडेण्ट आअिसनहुवर द्वारा १६ अप्रैल, १९५३ के दिन समाचारपत्रोंके संपादकोंके अमरीकन समाजके सम्मुख दिये गये भाषणमें से।]

". . . . दुनियाने पिछले आठ वर्षोंमें भय और हिंसाके मार्ग पर चलकर अपने लिअे अैसा जीवनमार्ग निर्माण कर लिया है।

"अिस भयंकर मार्गसे वापस लौटनेका यदि कोअी अुपाय नहीं खोजा गया, तो दुनिया और अुसकी कोअी भी प्रजा किस बातकी अुम्मीद रख सकेगी?

"अिसमें से खराबमें खराब जिस परिणामका डर हो सकता है और अच्छेमें अच्छे जिस परिणामकी अुम्मीद की जा सकती है, अुसका बहुत सरल और सीधेसादे शब्दोंमें वर्णन हो सकता है।

"खराबमें खराब परिणाम यानी अणुयुद्ध।

"और अच्छेमें अच्छा परिणाम यानी हमेशा सिर पर मंडराता हुआ भय और संकटमय जीवन। तमाम लोगोंकी संपत्ति और मजदूरीको खा जानेवाला शस्त्रास्त्रोंका बोझ; और अिस दुनियाके लोगोंके लिअे सुख और समृद्धि हासिल करनेमें अमेरिकाकी, सोवियट यूनियनकी या दूसरी किसी भी पद्धतिको असफल बना दे अैसी शक्तिकी निरर्थक बरबादी।

"हरअेक बनाअी जानेवाली बन्दूक, समुद्रमें तैरनेके लिअे छोड़े जानेवाले हरअेक जहाज और फोड़े जानेवाले हरअेक रॉकेटका अर्थ अन्तमें तो अन्नके अभावमें भूखे मरनेवाले और कपड़ोंके अभावमें ठंडसे मरनेवाले लोगोंके पास से की हुअी चोरी ही है।

"शस्त्रोंसे लैस रहनेकी होड़में अुतरी हुअी यह दुनिया केवल पैसेकी ही बरबादी नहीं करती।

"वह तो अपने मजदूरोंके पसीनेकी भी बरबादी कर रही है, अुसके वैज्ञानिकोंकी बुद्धिकी भी बरबादी कर रही है और अुसके बालकोंकी अुम्मीदोंको भी मिट्टीमें मिला रही है।

"आजके बड़े बॉम्बर विमानकी कीमत तीससे अधिक शहरोंमें स्कूलके अेक-अेक आधुनिक अींट-चूनेके मकान जितनी है।

अथवा

"बिजली अुत्पन्न करनेवाले दो कारखानों जितनी है, जिनमें से हरअेक ६०,००० की आबादीवाले शहरको बिजली देता है।

अथवा

"दो पूरी तरह सुसज्जित अस्पतालों जितनी है।

अथवा

"सिमेन्ट-कॉन्क्रीटके ५० मील लंम्बे राजमार्ग जितनी है।

"अेक युद्ध-विमानके पीछे हम पांच लाख बुशल गेहूंकी कीमत खर्च करते हैं।

"अेक विध्वंसक जहाजके पीछे हम ८००० मनुष्योंको बसाने लायक नये मकान बनाने जितना पैसा खर्च करते हैं।

"और मैं फिरसे बतलाता हूं कि यह तो आज दुनिया जो मार्ग ग्रहण कर रही है, अुस मार्गसे यथासंभव अच्छेमें अच्छे जीवनमार्गका चित्र है। लेकिन अिसे सही मानेमें जीवनमार्ग नहीं कहा जा सकता। यह तो युद्धके मंडराते हुअे गहरे बादलोंके नीचे सारी मनुष्य-जातिका सूली पर अधरमें लटकने जैसा है।"

('न्यूयॉर्क टाअिम्स' १७ अप्रैल, १९५३)

अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्

परिषद्के परीक्षा-मंत्री बताते हैं कि — अखिल भारतीय हिन्दी महाविद्यालय, आगराका अगला सत्र १५ जुलाअी, १९५३ से शुरू होगा। विद्यालयमें 'हिन्दी पारंगत' और 'शिक्षण कला प्रवीण' की शिक्षा दी जाती है। शिक्षणकी अवधि ग्यारह महीनेकी है।

परिषद्की 'विशारद' की श्रेणीके विद्यार्थी अिस विद्यालयमें प्रवेश पा सकते हैं। गुजरात विद्यापीठकी 'सेवक' या हिंदुस्तानी प्रचार सभा, वर्धाकी 'काबिल' परीक्षा पास विद्यार्थी तीन वर्षके शिक्षण कार्यका अनुभव रखने पर सीधे 'पारंगत' में बैठ सकते हैं। दो वर्षका अनुभव रखनेवाले आगरेके पारंगत विद्यालयमें प्रवेश पा सकते हैं। अहिन्दी-प्रदेशके कुछ विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति भी दी जायगी।

विशेष विवरणके लिअे मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्, आगराको लिखे।

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

११ जुलाअी १९५३

जमींदारी और कारखानेदारी

ता० २७-६-'५३ के 'हरिजनबंधु'* में श्री राजाजीके भाषणका अेक हिस्सा अुद्धृत किया गया है, जिसमें अुन्होंने दो तरहकी जमींदारीकी बात कही थी। अुस तरफ हमें अधिक ध्यान देना चाहिये। अुन्होंने कहा था कि जिस तरह अनेक काश्तकार जिस जमीन पर मेहनत-मजदूरी करते हैं, वह जमीन अेकत्रित होकर अेक जमींदारके कब्जेमें पड़ी देखनेको मिलती है, अुसी तरह मिलके जरिये अनेक करघों और चरखों पर कब्जा रखकर मिल-मालिकोंने 'औद्योगिक जमींदारी' खड़ी की है। अिसलिअे काश्तकारोंकी जमींदारीकी तरह अुद्योगोंमें जमी हुअी यह दूसरी जमींदारी भी खतम होनी चाहिये। अैसा होगा तो ही हम अपने देशके औद्योगिक जीवनकी पक्की बुनियाद डाल सकेंगे और आज जो अशांति बनाये रखनेवाली अव्यवस्था देखनेमें आती है, अुसमें नवनिर्माण और क्रान्तिके बीज बो सकेंगे। हमारे देशकी आबादीका बहुत बड़ा भाग किसानों और बुनकरोंका है। अुनकी यदि ठीक व्यवस्था हो जाय और अुन्हें शान्तिसे अपना कामकाज करने लायक और रोटी कमा सकने लायक बनाया जा सके, तो कहा जायगा कि हमने भारतकी अर्थ-व्यवस्थाकी मजबूत नींव डाल दी।

श्री राजाजीने अिस चीजको अपनी — और कहिये कि हमारे देशकी — राजनीतिका मुख्य लक्ष्य बताया है और कहा है कि वे अिसीकी सिद्धिके लिअे मेहनत कर रहे हैं। दुःख अिसी बातका है कि केन्द्रीय सरकारके योजनाकारोंने अभी तक अिस बातको स्वीकार नहीं किया है और अिस कारणसे हमारी पंचवर्षीय योजनामें अेक गंभीर दोष रह गया है। हालमें मैं ब्रिटेनके विद्वान समाज-शास्त्री श्री टॉनीकी 'अटेक' नामक नअी पुस्तक पढ़ रहा था। अुसमें अुन्होंने अेक यह मार्मिक बात कही है कि केवल आर्थिक योजनाका नाम देनेसे कोअी वास्तविक योजना नहीं बन जाती। अुसमें देखना यह होता है कि अुस योजनासे क्या हेतु सिद्ध करने हैं, अुन्हें सिद्ध करनेके लिअे क्या क्या अुपाय काममें लिये जायंगे और ये दोनों बातें किस दृष्टि और वृत्तिसे प्रेरित होकर की जाती हैं। यही सच्ची योजनाकी मुख्य पहचान है। योजना केवल यह बतानेवाला बजट नहीं है कि किस तरह काम करनेसे कितना अुत्पादन होगा; वह तो राष्ट्रीय अर्थनीतिकी दिशा बदल कर अुसके आर्थिक जीवनका नया आरंभ करनेवाली शक्ति और अुसका नकशा होनी चाहिये। जैसे कि श्री राजाजीने किसानों और बुनकरोंको गौरव और स्वाभिमानपूर्वक अुनके स्थान पर बैठानेकी जो मांग की है, अुसमें अेक प्रचंड योजनाका गुण मौजूद है। अुसे देशकी अेक योजना कहा जा सकता है। क्योंकि अुसमें क्रांति और नये आरंभकी शक्ति भरी है। अब हम देखें कि यह कैसे संभव है।

श्री राजाजीने कहा है कि जमीन और पूंजीके मालिकी हकके जोर पर देशमें दो तरहके 'जमींदार' या मालदार पैदा हुअे हैं — जमींदार और कारखानेदार। दोनों वर्ग अधिकसे अधिक नफा कमानेके अुद्देश्यसे ही काम करते हैं। अुनका सीधा अुद्देश्य राष्ट्रके लिअे अन्न-वस्त्र और दूसरा जरूरी सामान पैदा करनेका नहीं होता, जैसा कि दरअसल होना चाहिये। अुसी तरह अिन चीजोंके अुत्पादनके बाद अुनका व्यापार करनेवाला व्यापारी वर्ग भी अिस मुख्य अुद्देश्यसे व्यापार नहीं करता कि वे चीजें सबको सस्ते भावसे मिलें; अुसका अेकमात्र ध्यान अिस तरफ होता है कि अिन चीजोंके व्यापारसे कितना नफा मिलता है। अिसीलिअे संग्रह-खोरी, चोरबाजार वगैरा नफा कमानेकी तरकीबोंको व्यापारियोंकी योग्यता या कुशलता माना जाता है।

हमारी आजकी अर्थ-व्यवस्थामें नफेकी ही दृष्टि रखनेका यह अेक भारी दोष है। अुसे दूर करनेके लिअे पूर्ण रूपसे विचार करके कोअी योजना बनाअी जाय, तो वह सच्ची राष्ट्रीय योजना कही जायगी। भारतके किसानों और बुनकरोंको स्वावलंबी बनाना चाहिये। अुससे भारतकी आबादीके बहुत बड़े भागके धंधे और रोटीका सवाल अेकदम हल हो जायगा। पाठकोंको याद होगा कि गांधीजीको जब भारतमें विदेशी सरकारने पहले-पहल गिरफ्तार किया और अदालतने अुनसे पूछा कि आपका धंधा क्या है, तो अुन्होंने कहा था कि मैं बुनकर-किसान हूं। किसानमें वे बुनकरको शामिल कर लेते थे। क्योंकि अुन्होंने राष्ट्रको समझाया था कि खेतीके कामसे मिलनेवाली फुरसतका अुपयोग किसी सर्वसाधारण अुद्योगमें करना ही चाहिये; और वैसा अेक बड़ा अुद्योग कताअी-पिंजाअीका है। आज हम जानते हैं कि भारतका मुख्य सवाल सबको अन्न, वस्त्र और रहनेके मकान देनेका है। अिसका अर्थ भी यही होगा कि किसान और बुनकरको — अुसकी जमीन, चरखे और करघेको — देशकी अर्थ-व्यवस्थामें स्थान देना चाहिये। परंतु आज ये सब अूपर बताअी गअी दो तरहकी जमींदारियोंके असह्य बोझके नीचे दब जानेके कारण अपनी शक्ति नहीं दिखा सकते। वे अपनी शक्ति दिखा सकें, अिसके लिअे हमें अनुकूल परिस्थितियां पैदा करनी होंगी और जरूरी सहूलियतें तथा सरंजाम खड़ा करना होगा। यही हमारा मुख्य काम है। जो योजना जिस हद तक यह काम करे, अुसमें अुतनी हद तक सच्ची योजनाके गुण मौजूद हैं, अैसा मानना चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि आज हमारे आर्थिक जीवनमें जमीन और पूंजी पर खानगी मालिकी हककी प्रथाके बल पर जो अंधेरगर्दी चल रही है, अुस पर काबू पाना चाहिये।

स्वभावतः यहां सवाल पैदा होगा कि यह सब कैसे किया जाय। अिसे सिद्ध करनेके लिअे न्याय और शान्तिके यानी लोकशाही ढंगके अुपाय खोजने होंगे। और अिन अुपायोंका आधार अिस मान्यता पर नहीं है कि दुनियामें कुत्ते-बिल्लीकी तरह सतत लड़ते रहनेवाले मनुष्योंके मानो कुदरतके ही बनाये हुअे मालिक-मजदूर, काश्तकार-जमींदार, अमीर-गरीब जैसे दो वर्ग हैं; बल्कि अिस सिद्धान्त पर है कि समाजकी रचना अैसी की जाय जिससे राष्ट्रके श्रम, पूंजी और जमीनका अुपयोग देशकी समग्र जनताके हितमें हो और अुसमें सब वर्गोंको अुनका न्यायोचित स्थान मिल सके। आज अुसमें जो भयंकर विषमता पाअी जाती है, अुसे दूर करना होगा। जमीन, पूंजी और श्रम समाजके हैं; अुन पर किसीकी खानगी मालिकी नहीं हो सकती। सारी जमीन ही नहीं, बल्कि सारी पूंजी या संपत्ति भी समाजकी है। समग्र समाजका हित ही अुनका अुद्देश्य होना चाहिये। अतः अिस ढंगसे ही अुनकी योजना की जानी चाहिये।

आज भूमिदान-यज्ञ और सरकारी कानून-कायदे अिस मुख्य सिद्धान्तके आधार पर ही जमीनकी व्यवस्थाका काम कर रहे हैं। अिसी तरह अुद्योग और पूंजी तथा श्रमकी व्यवस्थाका काम भी हाथमें

* अिसी तारीखके 'हरिजनसेवक' में श्री राजाजीके भाषणका यह भाग 'हमारी खेती और अुद्योगोंकी मिलीजुली अर्थ-रचना' के नामसे छपा है।

www.vinoba.in

लेना जरूरी है। अुसका रास्ता मजदूर-संगठनका काम करनेवाले मजदूर-संघों, पूंजी और अुद्योगोंके संगठनका काम करनेवाले अुद्योग-मंडलों और बैंकोंको खोजना होगा। और यह याद रखना चाहिये कि यह केवल अेक राजनैतिक या आर्थिक आदर्श ही नहीं है; अुसे सिद्ध करनेके लिअे जन-आन्दोलन शुरू करनेकी जरूरत है। अिसलिअे हमें तुरन्त अिसका कोअी निश्चित क्रम सोच लेना चाहिये। अिस दृष्टिसे देखने पर मालूम होता है कि आज देशकी जनताके सामने अैसा कोअी समन्वित कार्यक्रम नहीं है। यह ठीक ढंगसे अुसके सामने रखना जरूरी हो गया है। तभी जनता अपनी शक्ति प्रकट कर सकेगी।

४-७-'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

सच्चे अीसाअी

[पश्चिम बंगालके गवर्नर डॉ० अेच० सी० मुकर्जी पक्के अीसाअी हैं। वे गांधीजी और अुनके कार्यसे खूब प्रेम करते थे। वे नवजीवनसे अपना सम्पर्क बनाये रखते हैं, जो गांधीजीकी पुस्तकों, पत्रों वगैराका प्रकाशन करता है। वे अक्सर कार्यालयके व्यवस्थापकसे कअी विषयों पर पत्रव्यवहार किया करते हैं। १५ जून, १९५३ को अुन्होंने नवजीवनके व्यवस्थापक श्री जीवणजी देसाअीको जो पत्र लिखा, वह पाठकोंके ध्यानमें लाने जैसा है, खासकर अैसे समय जब कि कुछ अीसाअी धर्म-परिवर्तन वगैरा विषयोंकी चर्चा करते हैं। गांधीजी कहा करते थे कि हमें कभी अैसी अिच्छा नहीं करनी चाहिये कि 'कोअी अपना धर्म बदले। हमारी हार्दिक प्रार्थना यह होनी चाहिये कि अेक हिन्दू ज्यादा अच्छा हिन्दू, अेक मुसलमान ज्यादा अच्छा मुसलमान और अेक अीसाअी ज्यादा अच्छा अीसाअी बने।' गांधीजीके हिन्दूधर्मकी तरह डॉ० मुकर्जीका अीसाअी धर्म भी अुन्हें अैसा ही व्यवहार करना सिखाता है। यह श्री जीवणजीके नाम लिखे अुनके नीचे अुद्धृत किय गये पत्रसे जाना जा सकता है।

२३-६-'५३ —म० प्र०]

राजभवन,
दार्जीलिंग,
१५ जून, १९५३

प्रिय जीवणजीभाअी,

मैं आपके लिअे श्रीमद् भगवद्गीताकी अेक प्रति भेज रहा हूं, जिसमें मूल संस्कृत श्लोकोंके साथ नेपाली अनुवाद दिया गया है।

पिछले साल अक्तूबरमें पश्चिम बंगालके अिस जिलेके अपने निवास-कालमें दार्जीलिंग, कुर्सिओंग और कलिंपोंगमें मैंने जो कुछ देखा, अिस नेपाली गीताका प्रकाशन अुसीका नतीजा है।

बड़े आश्चर्य और दुःखके साथ मैंने देखा कि अपनेको हिन्दू कहनेवाले बहुतसे नेपाली अैसे रीति-रिवाजोंका पालन करते हैं, जिनसे न केवल हिन्दुओंको बल्कि मुझ जैसे तीसरी पीढ़ीके अीसाअीको भी घृणा होती है।

अिसलिअे मेरे मनमें यह विचार आया कि अिन नेपाली पहाड़ी लोगोंके सामने अत्यन्त साररूपमें हिन्दू धर्मग्रन्थ रखना मेरा कर्तव्य है। और श्रीमद् भगवद्गीता अिसका सबसे सुन्दर नमूना है।

मैंने दार्जीलिंग, कुर्सिओंग, कलिंपोंग और सिलिगुरीमें बसे हुअे कुछ व्यापारियोंके सामने यह बात रखी और अुनसे अपील की कि गीताका नेपाली संस्करण प्रकाशित करनेके लिअे वे मुझे पैसा दें। बादमें मैं कलकत्तेके चार बड़े व्यवसाअियोंके पास भी पहुंचा और कुल रु० ५७४३ अिकट्ठे करनेमें सफल हुआ।

फिर मैंने श्री पॉल बेन्थॉलसे, जो अभी-अभी सेवानिवृत्त होकर अिंग्लैंड लौटे हैं और अुस समय टीटागढ़ पेपर मिल्सके मेनेजिंग डाअिरेक्टर थे, विनती की कि वे नेपाली गीताके लिअे जरूरी सारा कागज मुझे रियायती दरसे दें। अुन्होंने न सिर्फ मेरी विनती ही स्वीकार की, बल्कि अिसके लिअे अेक खास प्रकारका कड़ा कागज भी बनवा दिया, जो अधिक समय तक टिकनेवाला होता है।

पंडित धरणीधर शर्मा (अेम० अे०, बी० टी०) ने, जो बनारसके सेन्ट्रल हिन्दू कालेजके पुराने विद्यार्थी रह चुके हैं, हालमें ही सरकारी नौकरीसे निवृत हुअे हैं और खुद नेपाली ब्राह्मण हैं, गीताका नेपाली अनुवाद किया और अुसके प्रूफ सुधारे।

नेपाली गीताकी १० हजार प्रतियां छापी गअीं। अेक प्रतिका लागत खर्च लगभग १० आना आया है। मेरी योजना अेक प्रति पांच आनेमें बेचनेकी है, जिसमें से अेक आना कमीशनके तौर पर बुकसेलर लेगा और चार आने मूल कोशमें जमा कर दिये जायंगे।

यह सुनकर आपको अवश्य खुशी होगी कि विभिन्न बुकसेलर ७००० प्रतियां तो अब तक ले चुके हैं और मुझे पक्का विश्वास है कि बाकी प्रतियां भी ज्यादासे ज्यादा अेक सालमें बिक जायंगी।

पंडित भानुभक्त शर्मा, जिनका १८४० के आसपास अवसान हुआ था, पद्यरूपमें नेपाली रामायणके रचयिता है। अिस रामायणके अेक या दो संस्करण निकले हैं, लेकिन अुनमें गलतियोंकी भरमार है।

मैंने यहांके गवर्नमेन्ट हाअीस्कूलके वर्तमान हेडमास्टरसे, जो संस्कृतके भी धुरंधर विद्वान हैं, कहा है कि वे अिस महान ग्रन्थका अैसा प्रामाणिक संस्करण तैयार करें, जिसमें विभिन्न टीकाकारोंकी टीकायें दी गअी हों, कठिन शब्दोंके अर्थ दिये गये हों और अिस कविका जीवन भी दिया गया हो।

मैं अिस ग्रन्थकी १० हजार प्रतियां ३० से ३५ हजारके खर्चमें छापनेकी और अेक प्रति लगभग रु० १-८-० में पहाड़ियोंको सुलभ बनानेकी योजना तैयार कर रहा हूं। मेरा विश्वास है कि हमारी मातृभूमिके अिस भागमें बसनेवाले पहाड़ी लोगोंके सांस्कृतिक पुनर्जागरणमें मदद करनेका यही अेक रास्ता है।

मैं यह सारी जानकारी आपको अिसी आशासे दे रहा हूं कि यहांके पहाड़ी लोगोंको मदद करनेके मेरे अिस प्रयत्नको सर्व शक्तिमान परमेश्वरसे की जानेवाली आपकी प्रार्थनाका बल मिले — जिसकी पूजा और अुपासना हम सब अपने-अपने ढंगसे करते हैं।

आपका

(अंग्रेजीसे) अेच० सी० मुकर्जी

हमारा नया प्रकाशन

विवेक और साधना

लेखक : **केदारनाथ**

संपादक

किशोरलाल मशरूवाला : रमणीकलाल मोदी

यह पुस्तक वेदान्त, भक्ति, ध्यान, योग-साधना, सिद्धि, साक्षात्कार, तप, वैराग्य आदि विषयोंके जिज्ञासुओं और साधकोंको भी विवेककी कसौटी पर परखा हुआ सच्चा मार्ग बतायेगी और सीधा-सादा, सदाचारी तथा कुटुम्ब, समाज व देशकी सेवाका जीवन बितानेके अिच्छुक संसारियोंको भी रूढ़िवाद और अंधश्रद्धासे अूपर अुठाकर विवेकका रास्ता दिखायेगी। अिसमें लेखकने जगह-जगह अिस बात पर जोर दिया है कि सद्गुणोंकी वृद्धि करके मानवताका विकास करना ही मनुष्य-जीवनका सर्वोच्च ध्येय और चरम सार्थकता है।

कीमत ४—०—० डाकखर्च ०-१२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद—९

www.vinoba.in

ओश्वर सत्यरूप है

आपने मुझसे पूछा है कि मैं अैसा क्यों मानता हूं कि ओश्वर सत्यरूप है। मेरी किशोरावस्थामें मुझे हिंदू धर्मग्रंथोंमें जिन्हें ओश्वरके सहस्रनाम कहा जाता है, अुनका जप करना सिखाया गया था। लेकिन ये सहस्र (हजार) नाम भी अधूरे ही थे, भगवानके नामोंकी गिनती अुनसे पूरी नहीं होती थी। हम लोगोंका अैसा विश्वास है — और मेरा विचार है कि वह सही है — कि ओश्वरके अुतने नाम हैं जितने प्राणी हैं, अिसलिअे हम यह भी कहते हैं कि ओश्वर अनाम है। और क्योंकि ओश्वरके कअी रूप हैं, अिसलिअे हम अुसे अरूप भी मानते हैं। फिर, वह हमसे कअी बोलियोंमें बोलता है, अिसलिअे हम अुसे अबोला भी मानते हैं, अित्यादि। और जब मैंने अिस्लामका अध्ययन किया तो मालूम हुआ कि अिस्लाममें भी ओश्वरके कअी नाम हैं। तो जो लोग अैसा कहते हैं कि भगवान् प्रेमरूप है, अुनके साथ मैं भी अुसे प्रेमरूप कहता हूं। लेकिन अपने अन्तरकी गहराओमें मैं कहा करता था कि ओश्वरकी सबसे ज्यादा सही व्याख्या यही है कि वह सत्यरूप है। अगर मनुष्यकी बोलीमें अुसका पूर्णतम परिचय देना संभव हो, तो मैं अिस नतीजे पर आया हूं कि मेरे लिअे तो ओश्वर सत्यरूप है। लेकिन दो वर्ष पहले मैं और अेक कदम आगे बढ़ा और मैंने कहा कि सत्य ही ओश्वर है। ओश्वर सत्य-रूप है और सत्य ही ओश्वर है, अिन दो वर्णनोंमें जो बारीक भेद है वह आप समझ सकेंगे। मैं अिस नतीजे पर सत्यकी सतत और अविश्रान्त खोजके बाद आया हूं — अैसी खोजके बाद जो पचास वर्ष पहले शुरू हुअी थी। अुस समय मैंने यह देखा कि सत्यके पास हमारी निकटतम पहुंच प्रेमके द्वारा ही होती है। लेकिन मैंने यह भी देखा कि प्रेम शब्दके कम-से-कम अंग्रेजी भाषामें अनेक अर्थ हैं तथा मनुष्यका वासनारूप प्रेम तो अुसे गिरानेवाला भी हो सकता है। अिसके सिवा, मैंने यह भी पाया कि अहिंसाके रूपमें दुनियामें प्रेमके बहुत अिने-गिने अनुयायी हैं। लेकिन सत्यके सम्बन्धमें अर्थकी दुविधा मैंने नहीं देखी, यहां तक कि नास्तिक लोग भी सत्यकी शक्ति या अुसकी आवश्यकतासे अिनकार नहीं करते। लेकिन सत्यकी शोधकी अुनमें अितनी तीव्र अुत्कंठा थी कि अुन्होंने ओश्वरकी हस्तीसे अिनकार करनेमें भी संकोच नहीं किया, और अुनके दृष्टिकोणसे यह गलत नहीं था। अिस तरह विचार करने पर मैंने पाया कि ओश्वर सत्यस्वरूप है, यह कहनेके बजाय मुझे यही कहना चाहिये कि सत्य ही ओश्वर है। मुझे चार्ल्स ब्रैडलाका स्मरण आता है, जो अपनेको नास्तिक कहा करते थे। लेकिन मैंने अुनका जो परिचय पाया था, अुसे जानते हुअे मैं अुन्हें नास्तिक कदापि नहीं मान सकता। मैं तो अुन्हें ओश्वरसे डरनेवाला आस्तिक ही मानूंगा, यद्यपि मैं जानता हूं कि वे अिसके लिअे तैयार नहीं होते। अगर मैं अुनसे कहता कि "मिस्टर ब्रैडला, आप ओश्वरसे डरनेवाले न सही सत्यसे डरनेवाले आदमी हो," यानी सत्यको सोच-समझकर ही अपने कर्तव्यका निर्णय करते हो, तो अुनका चेहरा लाल हो अुठता। अगर वे ओश्वरकी बातका विरोध करते, तो जिस तरह मैंने दूसरे अनेक नवयुवकोंके विरोधका निरसन किया है, अुसी तरह मैं अुनके विरोधका निरसन भी यह कहकर कर देता कि सत्य ही ओश्वर है। फिर यह मुश्किल भी है कि लाखों लोग ओश्वरका नाम लेते रहे हैं और अुसके नाम पर जाने कितने अन्याय और अत्याचार करते रहे हैं। अिसका यह मतलब नहीं कि सत्यके नाम पर वैज्ञानिक लोग कुछ दुष्कर्म नहीं करते हैं। मैं जानता हूं कि विज्ञान और सत्यके नाम पर जानवरोंको अुनकी चीड़-फाड़ करते अे अमानुषिक तकलीफ दी जाती है। अिस तरह हम देखते हैं कि ओश्वरका वर्णन जिस तरह भी किया जाय, अुसमें बहुतसी कठिनाअियां हैं। लेकिन मनुष्यकी बुद्धि बहुत सीमित है और जब हम अैसी सत्ताकी बात करते हैं, जो हमारी बोध-शक्तिकी पहुंचके परे है, तो हमें सीमाओंके अन्दर ही अपना काम करना पड़ता है। फिर, हिन्दू दर्शनमें अेक चीज और है : — अेकमेव ब्रह्म ही है, अुसके सिवा दूसरा कुछ नहीं है। अिसी बात पर अिस्लामके 'कलमा' में भी जोर दिया गया है। अुसमें यह बात साफ तौर पर कही गअी है कि केवल ओश्वर है, और कुछ नहीं है। संस्कृतके सत्य शब्दका मतलब ही यह होता है — जो है, वह सत्य है। और भी अिन सब अनेक कारणोंका विचार करके मैं अिस परिणाम पर आया हूं कि ओश्वरकी 'सत्य ही ओश्वर है' — यही परिभाषा सबसे ज्यादा सन्तोषप्रद है। और जब आप सत्यको ओश्वरके रूपमें पाना चाहते हैं, तो अुसका अेक ही रास्ता है — प्रेम यानी अहिंसा; और चूंकि मैं विश्वास करता हूं कि अन्ततः साध्य और साधन अविभिन्न हैं, अिसलिअे मुझे यह कहनेमें भी कोअी संकोच नहीं कि ओश्वर प्रेमस्वरूप है।

'तब सत्य क्या है?'

सवाल बहुत कठिन है। लेकिन मैंने अपने लिअे अुसे अिस तरह हल कर लिया है कि हमारी अन्तरात्माकी आवाज जो कहे वही सत्य है। आप कहेंगे कि तब भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न और विरोधी बातोंको क्यों सत्य मानते हैं? मेरे विचारमें अिसका कारण यह है कि मनुष्यका मन अनेक माध्यमोंके जरिये काम करता है और सबके मनका विकास भी अेक-सा नहीं हुआ है, अतः अिसका यह फल होगा ही कि किसी अेकके लिअे जो सत्य हो, वह दूसरेको असत्य मालूम हो। अिसलिअे जिन्होंने सत्यकी शोधके प्रयोग किये हैं, वे अिस परिणाम पर आये हैं कि अिस प्रयोगमें सफलताके लिअे कुछ नियमोंका पालन करना जरूरी है। जिस तरह वैज्ञानिक प्रयोग करनेके लिअे वैज्ञानिक तालीमका होना परम आवश्यक है, अुसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्रमें प्रयोग करनेकी योग्यता प्राप्त करनेके लिअे भी कठिन प्राथमिक अनुशासनका पालन करनेकी जरूरत है। अिसलिअे जब कोअी आदमी अपनी अन्तरात्माकी आवाजकी बात करे, तो अुसे अपनी सीमाअें समझ लेनी चाहिये। अिसलिअे हम लोगोंकी यह धारणा है, और वह अनुभवके आधार पर प्रतिष्ठित है, कि जो सत्यको ओश्वर मानकर सत्यकी शोध करना चाहते हैं, अुन्हें कअी व्रतोंका अभ्यास होना चाहिये। अुदाहरणार्थ सत्य, ब्रह्मचर्य — क्योंकि अगर सत्यको प्रेम करते हैं तो फिर हमारा प्रेम किसी और चीजके लिअे नहीं हो सकता — अहिंसा, अपरिग्रह आदि। जब तक अिन व्रतोंका सम्यक् पालन आपने नहीं किया है, तब तक आपको सत्यकी शोधके प्रयोगका आरम्भ नहीं करना चाहिये। और भी कअी नियम हैं, लेकिन मैं अभी आपसे और ज्यादा नहीं कहूंगा। अितना ही कहना काफी है कि जिन लोगोंने ये प्रयोग किये हैं, वे जानते हैं कि कोअी भी आदमी अन्तरात्माकी आवाज सुननेका दावा करने लगे, यह अुचित नहीं है। आज हमारी अिस हैरान दुनियामें जो बहुतसा असत्य चल रहा है अुसका कारण यही है कि हर कोअी धार्मिक सत्यासत्यके निर्णयके अधिकारका दावा करने लगा है, लेकिन अुस योग्यताकी प्राप्तिके लिअे आवश्यक यम-नियम आदिका पालन कोअी नहीं करता। तो अिस विषय पर मैं आपसे अत्यन्त विनयपूर्वक अितना ही कह सकता हूं कि सत्यकी शोध वह व्यक्ति नहीं कर सकता, जिसमें बहुत बड़ी मात्रामें सच्ची नम्रता मौजूद न हो। अगर कोअी सत्य-समुद्रकी लहरों पर तैरना चाहता है, तो अुसे अपनेको शून्य जैसा हलका कर लेना चाहिये। अिससे अधिक अिस बारेमें मैं नहीं कह सकता।

('यंग अिंडिया', ३१-१२-'३१) **मो० क० गांधी**

www.vinoba.in

हाथ-कुटे चावलको प्रोत्साहन

अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने बम्बअीमें मअी १९५३ में हुअी अपनी तीसरी बैठकमें अेक प्रस्ताव द्वारा अिस बातकी मांग की है कि चावल कूटनेकी 'हलर' (huller) किस्मकी मिलोंको तत्काल बंद किया जाये। प्रस्तावमें यह भी मांग की गयी है कि 'शेलर' (sheller) किस्मकी मिलोंकी संख्या या कार्यक्षमतामें अब कोअी वृद्धि न की जाय। 'हलर' मिलों पर प्रतिबंधकी मांग क्यों की जा रही है, यह अुचित सवाल है; अुसका अुत्तर भी सीधा और आसान है। अन्न-मंत्रालयकी रायमें हलर मिल जिस चीजको कूटती-पीसती है, अुसे बहुत नुकसान पहुंचाती है, खासकर धानको तो अुससे बहुत नुकसान पहुंचता है।

कुटाअीके बाद रहा हुआ साबित माल शेलर-मिलके या हाथके कूटे हुअे चावलकी तुलनामें ७ से १२% अधिक कम होता है। हलर-मिलके कूटे हुअे चावलका पोषणका गुण भी कम होता है, क्योंकि अुसमें भूसी ज्यादा निकल जाती है। हलर-मिलमें बिजली भी शेलर-मिलकी बनिस्बत दुगुनी खर्च होती है, अिस तरह अुसमें बिजलीकी भी बरबादी है। हलर-मिलसे मिलनेवाली भूसी ठीक भी नहीं होती। धानकी टूटी भूसी तथा दूसरे रेशेवाले पदार्थके सिवा अुसमें रेत भी ज्यादा मिल जाती है। अैसी भूसी मवेशीको नुकसान पहुंचाती है, अिसलिअे धानकी मिलें अुसे अींधनकी तरह काममें लाती हैं। अिससे जाहिर है कि हलर-मिलें स्थायी रूपसे हानिकर हैं और मनुष्य तथा मवेशी दोनोंके खाद्यकी मात्रा कम करनेके अनिष्ट साधन हैं।

अन्न-मंत्रालय राज्य-सरकारोंसे आग्रह करता आ रहा है कि हलर किस्मकी चावलकी मिलें बन्द कर दी जायं।

सच पूछो तो जहां दूसरे गृह-अुद्योग मिलोंकी होड़में बरबाद होकर मिट गये, वहां चावलकी हाथ-कुटाअीका अुद्योग बड़ी हद तक बचा हुआ रहा है और अभी-अभी तक तीन-चौथाअी धान हाथके ही जरिये कूटा जाता रहा है। मिल-कुटाअी तो तब बढ़ी जब कन्ट्रोल आये और सरकारने धानकी वसूली और संग्रह शुरू किया। मिलकी कुटाअीकी मात्रा अिस हालतमें ४०% तक पहुंच गयी, तब भी बाकी ६०% धान हाथसे ही कूटा जाता रहा। अिस तरह देखें तो चावलकी मिलोंकी वृद्धिमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सरकारका कार्य कारण-रूप रहा है और अुसने हाथ-कुटाअीके अुद्योगको धक्का पहुंचाया है। अिस स्थितिके सुधारके लिअे राज्य-सरकारोंको चाहिये कि वे अपना संग्रह किया हुआ धान कूटनेके लिअे हलर या शेलर मिलोंको न दें।

हाथ-कुटाअीका अुद्योग खेती-कामका अेक स्वाभाविक अंग है। हाथ-कुटा चावल स्वादमें ज्यादा अच्छा और पोषक होता है, तथा हाथ-कुटाअी करनेवालोंको मजदूरी अनाजके रूपमें मिलती है। किसान भी धानकी बनिस्बत चावल बेचना ज्यादा पसन्द करता है, क्योंकि अिस तरह अुसकी मवेशीको भूसी मिलती है और स्त्रियोंको काम। अिन्हीं लाभोंको देखते हुअे बोर्डने यह मांग की है कि शेलर-मिलोंकी वर्तमान संख्या अब बढ़ायी न जाय, और आज १५००० हलर-मिलोंने हाथ-कुटाअी करनेवालोंका जो काम अुनसे छीन लिया है, वह अुन्हें वापस मिल जाय।

बोर्ड धानकी हाथ-कुटाअीके सुधारके लिअे अनुकूल साधन तैयार करनेकी कोशिश कर रहा है। वह धानकी भूसी अलग करनेवाली चक्कियोंका प्रचार करना चाहता है। अुसके अिस कार्यक्रमका अेक अंश धान-कुटाअीके लिअे समितियोंका संघटन करना भी है और अुसके लिअे कोशिश हो रही है। सारी समस्याको कअी दृष्टियोंसे सुलझानेकी कोशिश हो रही है; हलर-मिलें बन्द की जायं तथा दूसरी मिलोंकी वृद्धि या विस्तार न हो, यह मांग अुसके विस्तृत कार्यक्रमका अेक अंशमात्र है।*

(अंग्रेजीसे)

अमेरिकाकी गांधीवादी संस्थाअें

भारतमें नये आये हुअे आदमीको यहांकी विभिन्न रचनात्मक संस्थाओंमें से हरअेकका अपना अुद्देश्य और विशेष कार्य क्या है, यह समझनेमें काफी वक्त लग जाता है। अिसी तरह बहुतसे भारतीयोंको भी अिसी श्रेणीकी अमरीकी संस्थाओंके विषयमें वे जब-तब जो कुछ सुनते रहते हैं, अुसे समझनेमें काफी कठिनाअी होती है; और यह स्वाभाविक है। अिसलिअे कुछ मित्रोंका सुझाव है कि जिन अमरीकी संस्थाओंमें यहांके गांधीवादियोंको दिलचस्पी हो सकती है, अुनका मैं संक्षिप्त परिचय दूं।

यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिये कि चूंकि गांधीजी खुद कभी अमेरिका नहीं गये और चूंकि गांधीजीके कार्यक्रममें दिलचस्पी रखनेवाले अमेरिका-निवासियोंका अिस कार्यक्रमके विभिन्न हिस्सोंके प्रति अेक-सा आकर्षण नहीं है — कोअी हिस्सा अुन्हें ज्यादा आकर्षक मालूम होता है, कोअी कम; अिसलिअे अमेरिकामें कोअी अेक गांधीवादी संस्था नहीं है। प्रस्तुत लेखकके मतानुसार जो संस्था अिस स्थानके सबसे ज्यादा नजदीक आती है, वह है क्वेकर भाअियोंकी 'अमेरिकन फ्रेन्ड्स सरविस कमेटी' या संक्षपमें 'अे० अेफ० अेस० सी०'। अिस संस्थाका कार्यक्रम काफी व्यापक है — शान्तिकी शिक्षा, विभिन्न जाति-समुदायोंमें ज्यादा अच्छे संबंधोंका निर्माण और अन्यायका निवारण, आन्तरराष्ट्रीय युवक-कैम्प और विदेशोंमें पुनर्निर्माणके कार्यमें सहयोग। और अुसे अपने कार्यमें विचारशील अमरीकियोंकी सहानुभूति तथा सहायता अधिकाधिक मात्रामें मिल रही है।

जो संस्थाअें गांधीवादी कार्यक्रमके किसी अेक ही अंशकी सेवा कर रही हैं, अुनके चार विभाग किये जा सकते हैं: १. जो अहिंसाके लिअे काम करती हैं, २. जो विकेन्द्रीकरणके लिअे काम करती हैं, ३. जो जातीय द्वेष और अन्यायके निवारणका काम करती हैं और ४. जो ग्राम-निर्माणका काम करती हैं।

१. अहिंसा

'दि फेलोशिप ऑफ रीकन्सीलियेशन' (अेफ० ओ० आर०), जो अमेरिकाके सिवा दूसरे देशोंमें भी काम करती है, अमेरिकाके शान्ति-आन्दोलनकी रीढ़ है। वह शान्तिकी शिक्षाका प्रचार करती है। यह काम धार्मिक अीसाअियोंके जरिये होता है और अधिकांशमें ये ही लोग अिस संस्थाके सदस्य हैं। अमेरिकामें शान्तिके आदर्शको जिलाये रखनेका श्रेय अिसी संस्थाको है।

'वार रेज़िस्टर्स लीग' (युद्धविरोधियोंका संघ) भी अिसी क्षेत्रमें काम करती है, पर युद्धका विरोध करनेमें अुसका दृष्टिकोण पहली संस्था जैसा धार्मिक नहीं है। अिन दोनों संस्थाओंकी सदस्य-संख्या कुछ हजार है।

'पीस मेकर्स' नामकी संस्था अपेक्षाकृत छोटी है, लेकिन वह १०० प्रतिशत शान्तिवादियोंकी संस्था है, जो सैनिक सेवाके लिअे अपना नाम दर्ज करानेसे अिनकार करते हैं।

'वीमेन्स अिन्टरनेशनल लीग फार पीस अेन्ड फ्रीडम' (शान्ति और स्वतंत्रताके लिअे स्त्रियोंका आन्तरराष्ट्रीय संघ) की स्थापना मशहूर सामाजिक कार्यकर्त्री श्री जेन अेडम्सने की थी। अिस संस्थाका प्रभाव खासकर क्वेकर स्त्रियोंमें ज्यादा है। वह आन्तरराष्ट्रीय और शान्तिवादी ढंगका शैक्षणिक कार्य करती है।

* अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डकी तरफसे निकाले गय बुलेटिनमें से।

www.vinoba.in

२. विकेन्द्रीकरण

दुर्भाग्यसे आर्थिक और राजनीतिक सत्ताके विकेन्द्रीकरणके काममें शायद ही कोअी अमरीकी व्यावहारिक दिलचस्पी लेता है, यद्यपि प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट और ट्रूमेनके 'न्यू डील' के जमानेमें पुरानी तरहके अनेक राजनीतिक नेताओंने राजसत्ताके लगातार वाशिंगटनमें केन्द्रित होते जानेका विरोध किया था। सहकारी आन्दोलन जरूर अेक बड़ा अपवाद है। अुपज बेचनेवाली सहकारी समितियोंमें विशेष सामाजिक चेतना नहीं है, पर खेतीकी जरूरी वस्तुओंकी खरीद करनेवाली और शहरके अुपभोक्ताओंकी समितियां — दोनों अमेरिकाकी बड़ी सहकारी संस्था 'कोऑपरेटिव्ह लीग ऑफ यू० अेस० अे०' की अंग हैं — विकेन्द्रीकरणकी प्रवृत्तिको काफी बल पहुंचाती हैं। ये संस्थाअें अेशियाके सहकारी आन्दोलनमें भी काफी दिलचस्पी लेती हैं।

टी० व्ही० अे० संस्थाके भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ० आर्थर मॉर्गन, जिन्हें पाठक अुच्च शिक्षा जांच-समिति (Commission on Higher Education) के सदस्यके रूपमें जानते होंगे, आजकल 'कम्यूनिटी सरविस' नामकी अेक संस्था चला रहे हैं। यह संस्था अमेरिकामें ग्रामीण बस्तियोंकी स्थापनाकी कोशिश करती है और विकेन्द्रीकरणका महत्त्व समझानेवाला साहित्य प्रकाशित करती है।

'दि फेडरेशन ऑफ अिन्टरनेशनल कम्यूनिटीज़' अमेरिकामें और अन्यत्र जो लोग सहयोगी समाज बनाकर रहनेके प्रयोग कर रहे हैं, अुनकी अेक नयी संस्था है। यह संस्था हिन्दुस्तानमें चलनेवाले आश्रमों या अिसी तरहके सहयोगी समुदायोंसे संबंध जोड़नेके लिअे अुत्सुक है।

३. जातीय भेद और अन्यायका निवारण

हिन्दुस्तानकी जात-पांतके भेदकी समस्याकी ही तरह अमेरिकामें गोरे और नीग्रो लोगोंके भेदकी समस्या है। अिस भेदभावके खिलाफ हमारे विदेशी मित्र जितना समझते हैं अुससे कहीं अधिक काम हो रहा है और अुसमें सफलता भी मिल रही है। अिस क्षेत्रमें अनेक संस्थाअें काम कर रही हैं, जिनमें सबसे बड़ी है — नेशनल अेसोसियेशन फार दी अेडव्हान्समेन्ट ऑफ कलर्ड पीपुल। अुसमें दोनों जातियोंके लोग हैं और अुसकी सदस्य-संख्या दस लाखसे अधिक है। अिस विरोधके लिअे अुसकी अपनी नीति मुख्यतः न्यायालयोंकी मदद लेनेकी है। दूसरी संस्था है सी० ओ० आर० अी० (Congress of Racial Equality)। यह संस्था है तो छोटी, पर बहुत क्रियाशील है और जातिभेद दूर करनेके अपने काममें सत्याग्रहका प्रयोग करती है। वह जो वक्तव्य या साहित्य आदि प्रकाशित करती रहती है, अुससे जाहिर होता है कि संस्था गांधीवादी है। सी० ओ० आर० अी० के कअी बड़े शहरोंमें और विश्वविद्यालयोंके विद्यार्थियोंमें अपने स्थानीय मंडल हैं। अुसकी कार्यपद्धतिका अेक अुदाहरण लीजिये: — अगर कोअी भोजनालय नीग्रो लोगोंको खाना देनेसे अिनकार करे और अुनका मैनेजर समझाने-बुझाने पर भी अपनी नीति बदलनेसे अिनकार करे, तो सी० ओ० आर० अी० के कार्यकर्ता, जिनमें दोनों जातियोंके सदस्य होते हैं, अुस भोजनालयमें घुसकर खाली जगहों पर बैठ जाते हैं। वे वहां शान्तिपूर्वक, जरूरत हो तो घंटों तक, बैठे रहते हैं और अिस बातकी प्रतीक्षा करते हैं कि भोजनालयका व्यवस्थापक अपना मत बदलेगा और अुन्हें खिलायेगा। दर्शकोंको वे अपना साहित्य बांटकर अपने कामका अर्थ और महत्त्व समझाते हैं। अिस तरहकी कोशिशोंमें अुन्हें काफी सफलता मिल रही है।

४. ग्राम-निर्माणका काम

अमेरिकाकी ग्राम-विकास-संबंधी समस्यायें हिन्दुस्तानकी समस्याओंसे भिन्न हैं। क्योंकि अगरचे वहां ग्राम-क्षेत्रोंमें शिक्षा और स्वास्थ्यकी सुविधाओंकी अुतनी अच्छी व्यवस्था नहीं है जितनी शहरोंमें है, मगर वहां यहांकी तरह बड़े पैमाने पर अशिक्षा और बेकारी तथा अर्ध-बेकारी भी नहीं है। जिसे हम रचनात्मक काम कहते हैं, अुसके अिस या अुस अंगसे संबंध रखनेवाली कअी संस्थायें ग्रामीण अमेरिकामें हैं, लेकिन गांवोंके रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी सर्व-सेवा-संघ जैसी कोअी संस्था वहां नहीं है।

लेकिन आदर्शकी भावना रखनेवाले कअी अमरीकी युवक अैसे हैं — और अुनकी संख्या बराबर बढ़ रही है — जो दूसरे देशोंमें जाकर ग्राम-निर्माणके काममें सहयोग देना चाहते हैं। वे धीरे-धीरे अिस निश्चय पर आ रहे हैं कि आजकी दुनियाका सबसे महत्त्वपूर्ण और रोमांचक काम अेशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिकाके गांवोंमें हो रहा है।

दि अिन्टरनेशनल डेव्हलपमेन्ट प्लेसमेन्ट अेसोसियेशन (आअी० डी० पी० अे०) संस्थाका काम अिन युवकोंमें जो ज्यादा योग्य हों अुन्हें चुनकर बाहरके देशोंमें रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओंके साथ रहने और काम करनेके लिअे भेजनेका है। अिनमें से कुछ तो स्वयंसेवकोंकी तरह आते हैं और कुछको वेतन देकर भी भेजा जाता है। वे अिस निश्चयसे ही आते हैं कि अुन्हें सादा जीवन जीना है, जहां काम करना है वहांके रीति-रिवाज और भाषा सीखनी है और कड़ा परिश्रम करना है। ज्यादातर ये दो साल तक काम करेंगे। अिनमें से कअी शिक्षक, समाजसेवक, किसान, डॉक्टर, नर्स, यंत्रविद् या अिंजीनियरकी तरह काम करनेकी तालीम पाये हुअे हैं।

कुछ युवकोंको हिन्दुस्तानमें गांधीवादी संस्थाओंमें रहकर काम करनेके लिअे भेजनेकी योजना बनाअी जा रही है। अिस लेखके कअी पाठकोंने शायद मिस पैट मेकमहोनको देखा होगा। वे अिस संस्थाकी ओरसे आयी हुअी पहली स्वयंसेविका हैं और विनोबाजीके साथ घूम रही हैं। बिल और अेलायस रोव नामके दो समाजसेवक कार्यकर्ता सेवाग्राम आ चुके हैं। अिनके सिवा सालके अन्तिम महीनोंमें दो व्यक्ति और आनेवाले हैं — अेक युवक डॉक्टर और अुनकी पत्नी, जो अेक मेडिकल टेक्नीशियन है। प्रस्तुत लेखक और अुनकी पत्नी भी अिसी संस्थाकी ओरसे आये हैं, लेकिन हम लोग यहां थोड़े दिनोंके लिअे ही हैं और पूर्व अफ्रीकामें जाकर काम करनेकी तैयारी कर रहे हैं।

जो गांधीवादी संस्थाअें अपने यहां अिन अमरीकी स्वयंसेवकोंको बुलाना चाहती हों, वे 'अिन्टरनेशनल डेव्हलपमेंट प्लेसमेंट अेसोसियेशन, १८४१ ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क सिटी, या श्री अी० डब्ल्यू० और आशादेवी आर्यनायकम्, सेवाग्रामको लिखें।

(अंग्रेजीसे)

डगलस कैले

विषय-सूची

		पृष्ठ
सच्चे कार्यकर्ता चाहिये	विनोबा	१४५
जमींदारी और कारखानेदारी	मगनभाअी देसाअी, अेच० सी० मुकर्जी	१४८
सच्चे अीसाअी		१४९
अीश्वर सत्यरूप है	गांधीजी	१५०
हाथ-कुटे चावलको प्रोत्साहन		१५१
अमेरिकाकी गांधीवादी संस्थायें	डगलस कैले	१५१
टिप्पणियां :		
प्रकट रूपमें अच्छा काम	म० प्र०	१४६
पेड़ लगाअिये	म० प्र०	१४६
अेक बड़ा जुआ	च० राजगोपालाचार्य	१४७
धर्म और शराब	वा० गो० ०	१४७
"मानवताको सूली पर चढ़ाया जा रहा है"	आअिसनहुवर	१४७
अ० भा० हिन्दी परिषद्		१४७

www.vinoba.in